

सर्वश्रेष्ठ मानव के सद्गुण

१. भले बनने का अर्थ भगवान के जैसा बनना है।
२. यदि आपको भूख लगी है, तो अपने क्रोध और अहंकार को खा डालें।
३. यदि आपको क्रोध आए तो स्वयं अपने से ही क्रोधित हो जाएँ।
४. साहस प्रथम सद्गुण है। सहानुभूति सर्वश्रेष्ठ सद्गुण है। प्रेम सर्वोच्च सद्गुण है। सत्य ऐसा सद्गुण है जिसको अपना लेने से समस्त सद्गुण आप में स्वयमेव ही आ जाएँगे।
५. अन्ततः एक दिन मर जाने के लिए जीवन न जीएँ, प्रत्यत् वास्तविक जीवन जीने के लिए अपने मैं को मारें।
६. कार्य करने से पहले बुद्धिशील होना बुद्धिमत्ता है, कार्य करते समय बुद्धिशील होना सावधानी है, किन्तु कार्य करने के बाद बुद्धिशील होना मूर्खता है।



WAVES OF JNANA GANGA

- There are as many opinions as there are men. Make your own choice.
- Give each what will be suitable to his temperament, capacity, and way of thinking.
- Give every man thy ear, but few, thy voice.
- Life is an unfoldment. Life provides you material for expresion and growth.
- Make God the Pole-star of your life. Give up all personal desire and aspire for Him alone.
- What is pleasent does not lead to supreme happiness.



दिव्य जीवन संघ, पुणे शाखा वृत्तांत

- 'दिव्य जीवन' मासिक पत्रिका सुमारे २०० व्यक्तींना वाटली
- आध्यात्मिक सहली दरम्यान मे महिन्याचा सत्संग बावची येथील ध्यान - मंदिरात दि. ३१ मे रोजी संपन्न झाला.

❀ पुणे शाखेचा पत्ता ❀

श्री. गो. आ. नगरकर
'स्वानंद' एस्. २०
सहजीवन सोसायटी
पर्वती, पुणे ४११००९
☎ ९३७०५७०२०६

श्री. नितीन देशपांडे
'ईशावास्य'
प्लॉट नं. ४९ /सायंतारा,
डी. एस. के. विश्व
धायरी, पुणे ४११०४१
☎ ०९८५०९३१४१७
०९८५०८२६९९०



पुस्त डाक

प्रति

दिव्य जीवन



(दिव्य जीवन संघ, पुणे शाखा)

स्वामी शिवानंद (ज्ञानयज्ञ म्हणून वितरित) स्वामी चिदानंद

सरस्वती

वर्ष १० | अंक ६

सरस्वती

जून २०१५

आध्यात्मिक सहल

दिव्य जीवन संघ, पुणे शाखेच्या सदस्यांची आध्यात्मिक सहल दि. ३० व ३१ मे २०१५ रोजी संपन्न झाली. तिचा वृत्तांत या अंकात आहे.

‘पथदर्शी - स्वामी चिदानंद सरस्वती’ या छोट्याशा पुस्तिकेचे शाखेचे अध्यक्ष श्री. भ. रा. नाईक यांच्या हस्ते दि. ३० मे रोजी प्रकाशन झाले. स्वामी चिदानंद सरस्वती यांच्या जन्म शताब्दी सोहोळ्याच्या निमित्ताने ही पुस्तिका पुणे शाखेच्या वतीने प्रकाशित आणि परिवारातील सदस्यांना वितरीत करण्यात आली.



महिन्याचा विचार

ज्ञान तथा पूर्णता

बादलों के गतिमान होने पर चन्द्रमा भी गतिमान प्रतीत होता है, उसी तरह अविवेकी व्यक्ती को आत्मा क्रियावान् मालूम पड़ता है, जब कि वस्तुतः इन्द्रिय ही कार्य करती हैं।

ज्ञान तीक्ष्ण शस्त्र है। यह निश्चय ही आपको बुराई से बचाता है। यह सबसे मजबूत अभेद्य किला है। इसे परमाणु बम द्वारा भी विनष्ट नहीं किया जा सकता है। मनुष्य इस किले के अन्दर सुरक्षित रह सकता है।

अमर जीवन तथा शुद्ध चैतन्य की प्राप्ति ही पूर्णता है। यह किसी नयी वस्तु की प्राप्ति नहीं है। यह तो विस्मृत आन्तरिक खजाने की पुनर्प्राप्ति है।

ईश्वर तथा उसकी शक्ति अभिन्न है। फूल तथा सुगन्ध, सूर्य तथा किरण, जीवन तथा शरीर के समान ही ईश्वर तथा उसकी शक्ति भी अभिन्न है। ईश्वर का मातृ - पहलू ही शक्ति है। वह ईश्वर का शक्तिस्वरूप है। शक्ति सच्चिदानन्दरूपिणी, चिन्मयरूपिणी, आनन्दरूपिणी है। माता की कृपा प्राप्त कीजिए।

यह शरीर ईश्वर का मन्दिर है। ईश्वर इस मन्दिर का अधिकारी है। वह अन्तर्यामी है। यह ईश्वर - साक्षात्कार के लिए एक निमित्त है, अतः इसे स्वस्थ एवं सबल बनाये रखना चाहिए। सदा ईश्वर का ही चिन्तन कीजिए तथा उससे पथ - प्रदर्शन और सहायता प्राप्त कीजिए।

असीम ब्रह्म ही आपके हृदय का केन्द्र है। इस अविद्या - आवरण को फाड़ डालिए। इस अहंकार को

चूर्ण कर डालिए। मल को गला दीजिए। ब्रह्म के साथ एक बन जाईए।

यही शिक्षा धार्मिक चैतन्य से रहित है, क्योंकि धर्म ही जीवन की सार्थकता है, धर्म ही जीवन-संग्राम का एकमेव लक्ष्य है। यदि धर्म का निषेध कर दिया गया, तो मर्त्य मनुष्य में हड्डी-मांस के अतिरिक्त अन्य कुछ शेष नहीं रहता।

जो ज्ञानी भद्र तथा क्षमाशील है, जो ईश्वर में विश्वास रखता है, जो विनीत है, जो सदा ईश्वर का स्मरण करता है, वह शाश्वत शान्ति के धाम प्राप्त करता है।

- स्वामी शिवानन्द



आध्यात्मिक सहल

मे ३०, २०१५

सकाळी ७ वाजता पुणे शाखेचे सात सदस्य या सहलीसाठी पुण्याहून रवाना झाले. पहिला टप्पा होता - सांगली येथील श्री. जेरे यांचे घर ! तेथे दुपारी स्वामीजींच्या पादुकांची यथासांग पूजा झाली. भोजनानंतर सर्व सदस्य माधवनगरला रवाना झाले. शाखेचे अध्यक्ष श्री. भ. रा. नाईक यांच्या हस्ते 'पथदर्शी स्वामी चिदानंद सरस्वती' या पुस्तिकेचे प्रकाशन करण्यात आले. त्यानंतर 'चिदानंद- चालिसा' या रचनेचे वाचन करून प्रसाद ग्रहण केल्यावर सर्वजण म्हैसाळ येथील ॐ मालती तपोवनात दाखल झाले.

तेथे संध्याकाळची आरती, प्रसाद झाल्यावर रात्रीचा सत्संग झाला, त्यांत सर्व सहभागी झाले.

मे ३१, २०१५

सकाळी ध्यान सत्रात सहभागी झाल्यावर स्वामी शिवानंद सरस्वतींची पूजा आणि आरती हा दैनंदिन कार्यक्रम होता. तपोवनाचा निरोप घेऊन सर्व मंडळी सांगली गणपतीच्या दर्शनाला गेली. पुढचा टप्पा होता - औदुंबर ! तेथे दर्शन घेतल्यावर, बावचीला प्रयाण केले. स्वामी शिवानंद सरस्वतींच्या आणखी एका ज्येष्ठ शिष्याचे (स्वामी प्रणवानंद सरस्वती) हे गांव ! स्थानिक आणि शिरोळ येथील स्वामीजींच्या शिष्यांबरोबर येथे मे महिन्याचा सत्संग संपन्न झाला. सत्संगानंतरचा प्रसाद आणि आदरातिथ्य याचा लाभ घेऊन सहल ३१ मे रोजी सायंकाळी पुण्याला परतली.

संपूर्ण प्रवासातील स्वागत, प्रेम आणि परिवारातील सदस्यांचे आतिथ्य हे कायम लक्षात राहिल. विशेषतः परप्रांतातील सदस्यांसाठी महाराष्ट्रातील हा प्रवास आणि ही स्थळे सुखद स्मृतीच्या रूपाने मनात उरतील. शाखेचा हाही एक संकल्प निर्विघ्नपणे आणि योजिल्याप्रमाणे पार पडला.

